17 जनवरी 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जनवरी (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जाना अमेरिका का शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 26 दिसम्बर 2018 से 1 जनवरी 2019 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

दिनांक 27 दिसम्बर को दोपहर में शिविर का विधिवत् उद्घाटन श्री कुलदीपजी रांका (I.A.S.) ने किया। कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त श्री सुशीलजी गोदिका, श्री अतुलभाई खारा, श्री अनंतजी पाटनी, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री बिपिनजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

शिविर उद्घाटनकर्ता श्री कुलदीपजी रांका (I.A.S.) ने धर्म और जीवन के उद्देश्य के बारे में अपने विचार व्यक्त किये एवं जन्म-मरण से रहित होने की भावना व्यक्त की। इसके पश्चात् श्री सुशीलजी गोदिका ने ग्रंथ भेंटकर श्री कुलदीपजी रांका का सम्मान किया।

इस अवसर पर जाना संयोजक श्री अतुलभाई खारा ने जाना - जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) का परिचय दिया; श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट व टोडरमल महाविद्यालय का परिचय दिया। इसके पश्चात् सभी आगन्तुक अतिथियों का तिलक लगाकर, श्रीफल भेंटकर व पगड़ी पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस शिविर में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में अमेरिका, यू.ए.ई. आदि देशों से लगभग 55 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत जयपुर के मंदिरों, पदमपुरा, चूलगिरि, अजमेर, नारेली, सोनीजी की नसियां आदि आस-पास के तीर्थों की यात्राएं हुई; प्रसिद्ध भजन गायक डॉ. गौरव सौगानी जयपुर द्वारा विशेष भजन संध्या, महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ज्ञान गोष्ठी आदि कार्यक्रम भी हुये।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

सातवाँ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सातवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

पार्श्वनाथ विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ रामगढ मोड़ स्थित स्योजी गोधा की नसिया में श्री दिगम्बर जैन राजस्थान लमेचुं सभा द्वारा आयोजित लमेचुं समाज का नववर्ष स्नेह मिलन समारोह के अन्तर्गत दिनांक 6 जनवरी को श्री पार्श्वनाथ विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा की गई। पूजन-विधान के कार्य पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 21

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(५) आदिनाथ भगवान जैसा समर्थ निमित्त पाकर भी मारीचि मिथ्यादृष्टि कैसे बना रहा? वह क्यों नहीं सुलटा और आदिनाथ उसे क्यों नहीं समझा पाये? आदि .....

यदि उपर्युक्त सभी बातों पर शान्ति से विचार किया गया, कारण-कार्य व्यवस्था को निमित्त-उपादान के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया तो दृष्टि में निर्मलता आ सकती है। मोक्षमार्ग में निमित्तों का क्या स्थान है इसका निर्णय कर सभी जीव स्वाधीन वृत्ति से साम्यभाव को प्राप्त करें। इस पवित्र भावना के साथ विराम.....।

समाधि-साधना और सिद्धि

सन्यास और समाधि है जीना सिखाने की कला।
बोधि-समाधि साधना शिवपंथ पाने की कला।।
सल्लेखना कमजोर करती काय और कषाय को।
निर्भीक और नि:शंक कर उत्सव बनाती मृत्यु को।।

मरण और समाधिमरण - दोनों मानव के अन्तसमय की बिल्कुल भिन्न-भिन्न स्थितियाँ हैं। यदि एक पूर्व हैं तो दूसरा पश्चिम, एक अनन्त दुःखमय और दुःखद है तो दूसरा असीम सुखमय व सुखद। मरण की दुःखद स्थिति से सारा जगत सु-परिचित तो है ही, भुक्त-भोगी भी है ; पर समाधिमरण की सुखानुभूति का सौभाग्य विरलों को ही मिलता है, मिल पाता है।

आत्मा की अमरता से अनभिज्ञ अज्ञजनों की दृष्टि में 'मरण' सर्वाधिक दुःखद, अप्रिय, अनिष्ट व अशुभ प्रसंग के रूप में ही मान्य रहा है। उनके लिए 'मरण' एक ऐसी अनहोनी अघट घटना है, जिसकी कल्पना मात्र से अज्ञानियों का कलेजा काँपने लगता है, कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है, हाथ-पाँव फूलने लगते हैं। उन्हें ऐसा लगने लगता है मानों उन पर कोई ऐसा अप्रत्याशित-अकस्मात अनभ्र वज्रपात होनेवाला है, जो उनका सर्वनाश कर देगा; उन्हें नेस्त-नाबूत कर देगा, उनका अस्तित्व ही समाप्त कर देगा। समस्त सम्बन्ध और इष्ट संयोग अनन्तकाल के लिए वियोग में बदल जायेंगे। ऐसी स्थिति में उनका 'मरण' 'समाधिमरण' में परिणत कैसे हो सकता है? नहीं हो सकता।

जब चारित्रमोहवश या अन्तर्मुखी पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण आत्मा की अमरता से सुपरिचित-सम्यग्दृष्टि-विज्ञजन भी 'मरणभय' से पूर्णतया अप्रभावित नहीं रह पाते, उन्हें भी समय-समय पर इष्ट वियोग के विकल्प सताये बिना नहीं रहते। ऐसी स्थिति में देह-जीव को एक मानने वाले मोही-बहिरात्माओं की तो बात ही क्या है? मृत्युभय से उनका प्रभावित होना व भयभीत होना तो स्वाभाविक ही है।

मरणकाल में चारित्रमोह के कारण यद्यपि ज्ञानी के तथा अज्ञानी के बाह्य व्यवहार में अधिकांश कोई खास अन्तर दिखाई नहीं देता, दोनों को एक जैसा रोते-बिलखते, दुःखी होते भी देखा जा सकता है; फिर भी आत्मज्ञानी-सम्यग्दृष्टि व अज्ञानी-मिथ्यादृष्टि के मृत्युभय में जमीन-आसमान का अन्तर होता है; क्योंकि दोनों की श्रद्धा में भी जमीन-आसमान जैसा ही महान अन्तर आ जाता है।

स्व-पर के भेदज्ञान से शून्य अज्ञानी मरणकाल में अत्यन्त संक्लेशमय परिणामों से प्राण छोड़ने के कारण नरकादि गतियों में जाकर असीम दुःख भोगता है; वहीं ज्ञानी मरणकाल में वस्तुस्वरूप के चिन्तन से साम्यभावपूर्वक देह विसर्जित करके 'मरण' को 'समाधिमरण' में अथवा मृत्यु को महोत्सव में परिणत कर स्वर्गादि उत्तमगति को प्राप्त करता है।

यदि दूरदृष्टि से विचार किया जाय तो मृत्यु जैसा मित्र अन्य कोई नहीं है, जो जीवों को जीर्ण-शीर्ण-जर्जर तनरूप कारागृह से निकाल कर दिव्य देह रूप देवालय में पहुँचा देता है।

कहा भी है -

''मृत्युराज उपकारी जिय कौ, तन सों तोहि छुड़ावै।
नातर[१] या तन बन्दीगृह में, पड़ौ-पड़ौ बिललावै[२]।।''

कल्पना करें, यदि मृत्यु न होती तो और क्या-क्या होता, विश्व की व्यवस्था कैसी होती?

अरे! सम्यग्दृष्टि की दृष्टि में तो मृत्यु कोई गंभीर समस्या ही नहीं है; क्योंकि उसे मृत्यु में अपना सर्वस्व नष्ट होता प्रतीत नहीं होता। तत्त्वज्ञानी यह अच्छी तरह जानता है कि मृत्यु केवल पुराना झोंपड़ा छोड़कर नये भवन में निवास करने के

१. अन्यथा २. दुःखी होना

समान स्थानान्तर मात्र हैं, पुराना मैला–कुचैला वस्त्र उतारकर नया वस्त्र धारण करने के समान है। परन्तु जिसने जीवन भर पापाचरण ही किया हो, आर्त[1]–रौद्रध्यान[2] ही किया हो, नरक–निगोद जाने की तैयारी ही की हो, उसका तो रहा–सहा पुण्य भी अब क्षीण हो रहा है, उस अज्ञानी और अभागे का दुःख कौन दूर कर सकता है? अब उसके मरण सुधरने का भी अवसर समाप्त हो गया है; क्योंकि उसकी तो अब गति के अनुसार मति को बिगड़ना ही है।

सम्यग्दृष्टि या तत्त्वज्ञानी को देह में आत्मबुद्धि नहीं रहती। वह देह की नश्वरता, क्षणभंगुरता से भली–भाँति परिचित होता है। वह जानता है, विचारता है कि –

''नौ दरवाजे का पींजरा[3], तामें सुआ[4] समाय।
उड़वे कौ अचरज नहीं, अचरज रहवे माँहि।।''

अतः उसे मुख्यतया तो मृत्युभय नहीं होता। किन्तु कदाचित् यह भी संभव है कि सम्यग्दृष्टि भी मिथ्यादृष्टियों की तरह आँसू बहाये। पुराणों में भी ऐसे उदाहरण उपलब्ध हैं – रामचन्द्रजी क्षायिक सम्यदृष्टि थे, तद्भव मोक्षगामी थे; फिर भी छह महीने तक लक्ष्मण के शव को कंधे पर ढोते फिरे।

कविवर बनारसीदास की मरणासन्न विपन्न दशा देखकर लोगों ने यहाँ तक कहना प्रारंभ कर दिया था कि ''पता नहीं इनके प्राण किस मोह–माया में अटके हैं? लोगों की इस टीका–टिप्पणी को सुनकर उन्होंने स्लेट पट्टी माँगी और उस पर लिखा –

ज्ञान कुतक्का[5] हाथ, मारि अरि मोहना।
प्रगट्यो रूप स्वरूप अनंत सु सोहना।।
जा परजै को अंत सत्यकरि जानना।
चले बनारसी दास फेरि नहिं आवना।।

अतः मृत्यु के समय ज्ञानी की आँखों में आँसू देखकर ही उसे अज्ञानी नहीं मान लेना चाहिए, क्योंकि वह अभी श्रद्धा के स्तर तक ही मृत्युभय से मुक्त हो पाया है; चारित्रमोह जनित कमजोरी तो अभी है ही न? फिर भी वह विचार करता है कि ''स्वतंत्रतया स्वचालित अनादिकालीन वस्तु व्यवस्था के अन्तर्गत 'मरण' एक सत्य तथ्य है, जिसे न तो नकारा ही जा सकता है, न टाला ही जा सकता है और न आगे–पीछे ही किया जा सकता है। कर्म सिद्धान्त के अनुसार भी जीवों का जीवन–मरण व सुख–दुःख अपने–अपने कर्मानुसार ही होता है। कहा भी है –

''परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा।[1]''

यद्यपि ज्ञानी व अज्ञानी अपने–अपने विकल्पानुसार इन प्रतिकूल परिस्थितियों को टालने के अन्त तक भरसक प्रयास करते हैं; तथापि उनके वे प्रयास सफल नहीं होते, हो भी नहीं सकते। अंततः इस पर्यायगत सत्य से तो सबको गुजरना ही पड़ता है। जो विज्ञजन तत्त्वज्ञान के बल पर इस उपर्युक्त सत्य को स्वीकार कर लेते हैं, उनका मरण समाधिमरण के रूप में बदल जाता है और जो अज्ञजन उक्त सत्य को स्वीकार नहीं करते, वे अत्यन्त संक्लेशमय परिणामों से मरकर नरकादि गतियों को प्राप्त करते हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि ज्ञानीजन स्वतंत्र–स्वसंचालित वस्तुस्वरूप के इस प्राकृतिक तथ्य से भलीभाँति परिचित होने से श्रद्धा के स्तर तक मृत्युभय से भयभीत नहीं होते और अपना अमूल्य समय व्यर्थ चिन्ताओं में व विकथाओं में बर्बाद नहीं करते; किन्तु इस तथ्य से सर्वथा अपरिचित अज्ञानीजन अनादिकाल से हो रहे जन्म–मरण एवं लोक–परलोक के अनन्त व असीम दुःखों से बे–खबर होकर जन्म–मरण के हेतुभूत विकथाओं में एवं छोटी–छोटी समस्याओं को तूल देकर अपने अमूल्य समय व सीमित शक्ति को बर्बाद करते हैं, यह भी एक विचारणीय बिन्दु है।

ऐसे लोग न केवल समय व शक्ति बर्बाद ही करते हैं, बल्कि आर्त–रौद्रध्यान करके प्रचुर पाप भी बाँधते रहते हैं। यह उनकी सबसे बड़ी मानवीय कमजोरी है।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब भी और जहाँ कहीं भी दो परिचित व्यक्ति बातचीत कर रहे होंगे वे निश्चित ही किसी तीसरे की बुराई भलाई या टीका–टिप्पणी ही कर रहे होंगे। उनकी चर्चा के विषय राग–द्वेषवर्द्धक विकथायें ही होंगे। सामाजिक व राजनैतिक विविध गतिविधियों की आलोचना–प्रत्यालोचना करके वे ऐसा गर्व का अनुभव करते हैं, मानों वे ही सम्पूर्ण राष्ट्र का संचालन कर रहे हों। भले ही उनकी मर्जी के अनुसार पत्ता भी न हिलता हो। नये जमाने को कोसना–बुरा–भला कहना व पुराने जमाने के गीत गाना तो मानो

१. पर में इष्टानिष्ट कल्पना २. हिंसा, झूठ, चोरी कुशीलादि में आनन्द चाहना
३. शरीर ४. तोता (जीव) ५. अस्त्र

१. सामायिक पाठ आचार्य अमितगति

उनका जन्मसिद्ध अधिकार ही है। उन्हें क्या पता कि वे यह व्यर्थ की बकवास द्वारा आर्त-रौद्रध्यान करके कितना पाप बाँध रहे हैं, जोकि प्रत्यक्ष कुगति का कारण है।

भला जिनके पैर कब्र में लटके हों, जिनको यमराज का बुलावा आ गया हो, जिनके माथे के धवल केश मृत्यु का संदेश लेकर आ धमके हों, जिनके अंग-अंग ने जवाब दे दिया हो, जो केवल कुछ ही दिनों के मेहमान रह गये हों, परिजन-पुरजन भी जिनकी चिरविदाई की मानसिकता बना चुके हों। अपनी अन्तिम विदाई के इन महत्वपूर्ण क्षणों में भी क्या उन्हें अपने परलोक के विषय में विचार करने के बजाय इन व्यर्थ की बातों के लिए समय है?

हो सकता है उनके विचार सामयिक हों, सत्य हों, तथ्यपरक हों, लौकिक दृष्टि से जनोपयोगी हों, न्याय-नीति के अनुकूल हों; परन्तु इस नक्कार खाने में तूती की आवाज सुनता कौन है? क्या ऐसा करना पहाड़ से माथा मारना नहीं है? यह तो उनका ऐसा अरण्य रुदन है, जिसे पशु-पक्षी और जंगल के जानवरों के सिवाय और कोई नहीं सुनता।

वैसे तो जैनदर्शन में श्रद्धा रखनेवाले सभी का यह कर्तव्य है कि वे तत्वज्ञान के आलम्बन से जगत के ज्ञाता-दृष्टा बनकर रहना सीखें; क्योंकि सभी को शान्त व सुखी होना है, आनंद से रहना है, पर वृद्धजनों का तो एकमात्र यही कर्तव्य रह गया है कि जो भी हो रहा है, वे उसके केवलज्ञातादृष्टा ही रहें, उसमें रुचि न लें, राग-द्वेष न करें; क्योंकि वृद्धजन यदि अब भी सच्चे सुख के उपायभूत समाधि का साधन नहीं अपनायेंगे तो कब अपनायेंगे ? फिर उन्हें यह स्वर्ण अवसर कब मिलेगा? उनका तो अब अपने अगले जन्म-जन्मान्तरों के बारे में विचार करने का समय आ ही गया है। वे उसके बारे में क्यों नहीं सोचते?

इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाने और जगत को सुधारने में उन्होंने अबतक क्या कुछ नहीं किया? बचपन, जवानी और बुढ़ापा - तीनों अवस्थायें इसी उधेड़बुन में ही तो बिताईं हैं, पर क्या हुआ? जो कुछ किया, वे सब रेत के घरोंदे[१] ही तो साबित हुए, जो बनाते-बनाते ही ढह गये और हम हाथ मलते रह गये; फिर भी इन सबसे वैराग्य क्यों नहीं हुआ?

१. बालक नदी के किनारे गीली मिट्टी से पाँव पर थोपकर जो घर बनाकर खेलते हैं।

आपको यह ज्ञात होना चाहिए कि यह मनुष्य पर्याय, उत्तम कुल व जिनवाणी का श्रवण उत्तरोत्तर दुर्लभ है। अनन्तानंत जीव अनादि से निगोद में हैं, उनमें से कुछ भली होनहार वाले बिरले जीव भाड़ में से उचटे विरले चनों की भाँति निगोद से एकेन्द्रिय आदि पर्यायों में आते हैं। वहाँ भी वे लम्बे काल तक पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पतिकायों में जन्म-मरण करते रहते हैं। उनमें से भी कुछ विरले जीव ही बड़ी दुर्लभता से दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार इन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय पर्यायों में आते हैं। यहाँ तक तो ठीक; पर इसके उपरांत मनुष्यपर्याय, उत्तमदेश, सुसंगति, श्रावककुल, सम्यग्दर्शन, संयम, रत्नत्रय की आराधना आदि तो उत्तरोत्तर और भी महादुर्लभ है जो कि हमें हमारे सातिशय पुण्योदय से सहज प्राप्त हो गये हैं। तो क्यों न हम अपने इस इन अमूल्य क्षणों का सदुपयोग कर लें। अपने इस अमूल्य समय को विकथाओं में व्यर्थ बरबाद करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

इस संदर्भ में भूधरकवि कृत निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

जोई दिन कटै, सोई आयु में अवश्य घटै;
बूँद-बूँद बीते, जैसे अंजुलि[१] कौ जल है।
देह नित छीन होत, नैन तेजहीन होत;
जीवन मलीन होत, छीन होत बल है।
आवै जरा नेरी[२], तकै[३] अंतक[४] अहेरी;
आबै परभौ नजीक, जात नरभौ निफल है।
मिलकै मिलापी जन, पूछत कुशल मेरी;
ऐसी दशा मांहि, मित्र काहे की कुशल है।

हम प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं कि तत्त्वज्ञान के बिना आत्मज्ञान के बिना संसार में कोई सुखी नहीं है, अज्ञानी न तो समता, शान्ति व सुखपूर्वक जीवित ही रह सकता है और न समाधिमरण पूर्वक मर ही सकता है।

अतः हमें आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए मोक्षमार्ग में प्रयोजनभूत दो-तीन प्रमुख सिद्धान्तों को समझना अति आवश्यक है। एक तो यह कि **भाग्य से अधिक और समय से पहले किसी को कभी कुछ नहीं मिलता** और दूसरा यह कि **न तो हम किसी के सुख-दुःख के दाता हैं, भले-बुरे के कर्त्ता हैं और न कोई हमें भी सुख-दुःख दे सकता है, हमारा भला-बुरा कर सकता है।** (क्रमशः)

१. चूल्लू २. नजदीक ३. देखता है, बाट जोहता है,
४. केवल रूप शिकारी

भीलवाड़ा में वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय कांवाखेड़ा शास्त्री नगर का छठा वार्षिकोत्सव दिनांक 11 व 12 जनवरी को सानन्द संपन्न हुआ, जिसमें वृहद् द्रव्यसंग्रह मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कर्म सिद्धांत विषय पर दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री नरेशकुमार प्रदीपकुमारजी लुहाड़िया द्वारा श्रीजी को शोभायात्रा के साथ मंदिर से कार्यक्रम स्थल श्री कुन्दकुन्द कहान संस्कार भवन में ले जाया गया। तत्पश्चात् ध्वजारोहण श्री जीवन सिंहजी हेमंतजी छाजेड़ परिवार द्वारा किया गया। प्रवचन हॉल का उद्घाटन श्री पारसजी निरुपमाजी लुहाड़िया परिवार द्वारा एवं पाण्डाल का उद्घाटन श्री संदीपजी राहुलजी छाबड़ा परिवार द्वारा हुआ। मंडल विधान का उद्घाटन डॉ. सी.पी. जैन-डॉ. सुमिता जैन परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा संपन्न हुये। सभी कार्यक्रम स्थानीय विद्वान श्री अरविन्दजी जैन व श्री अशोकजी सेठी के सान्निध्य में पूर्ण हुए। **- सुखमाल चौधरी**

स्वर्णिम अवसर

ग्वालियर (म.प्र.) स्थित **समयसार विद्या निकेतन** में कक्षा 7वीं व 8वीं में अंग्रेजी माध्यम से प्रवेश लेने के इच्छुक छात्रों के लिये स्वर्णिम अवसर! प्रवेश पात्रता शिविर फरवरी व मार्च के मध्य आयोजित होगा। प्रवेश इच्छुक छात्र 10 फरवरी तक प्रवेश फार्म भरकर जमा करा देवें। फार्म प्राप्त होने पर आपको साक्षात्कार हेतु आने की सूचना, धार्मिक व लौकिक परीक्षा का पाठ्यक्रम भेज दिया जायेगा। साक्षात्कार शिविर दिनांक 17 से 19 फरवरी तक आयोजित होगा।

सम्पर्क सूत्र - 9039365001 (प्राचार्य), 9893224022 (निर्देशक), 9589104084 (संयोजक)

ऑनलाईन फार्म भरने हेतु निम्न लिंक पर क्लिक करें - **http://samaysarvidyaniketan.com/?page_id=979**

श्री अष्टपाहुड विधान संपन्न

कलकत्ता : यहाँ पोद्दपुकर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के 13वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 27 दिसम्बर 2018 से 1 जनवरी 2019 तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री अष्टपाहुड विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात:काल ब्र. सुनीलजी शिवपुरी द्वारा प्रवचनों एवं रात्रि में प्रथमानुयोग की कथाओं का लाभ मिला। कार्यक्रम के ध्वजारोहणकर्ता एवं विधानकर्ता श्री चक्रेशजी अशोकजी सुशीलजी बजाज परिवार कोलकाता थे।

पूजन-विधान के कार्य पण्डित अनिलजी धवल भोपाल द्वारा हुये।

भूमिशुद्धि समारोह संपन्न

फुटेरा-दमोह (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन निर्माण हेतु भूमिशुद्धि समारोह दिनांक 27 दिसम्बर को श्रीमती कुसुम-महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर और डॉ. बासन्तीबेन मुम्बई के आतिथ्य में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा की अनुमोदनापूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सरस्वती विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित सुशीलजी शास्त्री फुटेरा एवं अमितजी अरिहंत के सहयोग से संपन्न हुये।

द्रव्यसंग्रह ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण द्रव्यसंग्रह ग्रंथ का विमोचन दिनांक 28 दिसम्बर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा कराया गया। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व 34 ग्रंथों का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा षट्खण्डागम पुस्तक 4 से 16 की खुदाई का कार्य शीघ्र ही पूर्ण होने वाला है।

संपर्क सूत्र - पण्डित मनोज कुमार जैन (चीनी वाले) मुजफ्फरनगर, मोबाइल-7599301008

शोक समाचार

(1) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी ब्र. कैलाशचंदजी अचल की माताजी **श्रीमती शांतिबाईजी** का दिनांक 13 दिसम्बर को 90 वर्ष की आयु में मन्दिर जाते समय शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन 5 घंटे स्वाध्याय करती थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1101/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्रीमती भूरीबाई धर्मपत्नी स्व. फूलचंदजी जैन का दिनांक 12 जनवरी को 88 आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की माताजी थीं।

(3) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्री अभयकुमारजी टडैया की धर्मपत्नी **श्रीमती चंदा टडैया** का 71 वर्ष की आयु में दिनांक 24 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अनेकों बार शिविरों में उपस्थित होकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेती थीं।

(4) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चमेलीदेवी सौगानी का दिनांक 20 दिसम्बर को 78 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(5) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री सनतकुमारजी जैन का दिनांक 9 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप भोपाल मुमुक्षु मण्डल सक्रिय सदस्य थे, तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सक्रिय रहते थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

भगवान नेमिनाथ का तत्त्वोपदेश

1

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(रोला)

रे एकत्व ममत्व और कर्त्ता–भोक्तापन।
यदि होवे पर में तो मिथ्यादर्श कहा है।।
अरे नहीं है कोई भी परद्रव्य किसी का।
और नहीं है कोई किसी का कर्त्ता–भोक्ता।। ५१ ।।

सब अपने–अपने में ही परिपूर्ण तत्त्व हैं।
कर्त्ता–भोक्ता भी सब अपने–अपने ही हैं।।
दो द्रव्यों के बीच कोई संबंध नहीं है।
सब अपने–अपने में ही शोभित होते हैं।। ५२ ।।

अपना जीवन–मरण और अपना सुख–दुख सब।
अपने से अपने में होते निश्चित जानो।।
इसमें आशंका शंका को स्थान नहीं है।
यह सम्पूरण बात नेमि जिनवर की जानों।। ५३ ।।

इस जग का कर्त्ता कोई भगवान नहीं है।
सुनों भव्य यह बात मात्र इतनी ही नहीं है।।
एक द्रव्य है नहीं अन्य का कर्त्ता–धर्त्ता।
मूल बात तो यह है इसे ध्यान से जानों।। ५४ ।।

इसे भूलकर जो परके कर्त्ता बनते हैं।
वे अज्ञानी जीव चतुर्गति भ्रमण करेंगे।।
उनके भव का अन्त नहीं है दूर–दूर तक।
वे चौरासी लाख योनियों में घूमेंगे।। ५५ ।।

पुण्य भला अर पाप बुरा सारा जग कहता।
पर निश्चय से इनमें कोई भेद नहीं है।।
कर्मबंध के कारण तो दोनों ही होते।
कर्मबंध कटने का कारण कोई नहीं है।। ५६ ।।

सोने की बेड़ी पुण्य पाप लोहे की बेड़ी।
पर दोनों बंधन का कारण ही होती हैं।।
दोनों में से कोई नहीं मुक्ति का कारण।
इस परम सत्य का उद्घाटन जिनवाणी करती।।५७।।

पुण्योदय से मिलती हमें भोग सामग्री।
उसे भोगने से बंधता है पाप निरन्तर।।
पापोदय से सभी भयंकर दुख को भोगें।
इस तरह पुण्य भी हो जाता दुखों का कारण।।५८।।

पुण्य–पाप है कर्म जाति के जुड़वा भाई।
दोनों से ही कर्मबंध निश्चित होता है।।
अरे धर्म तो है अबंध का कारण भाई।
पुण्य धर्म कैसे हो सकता बोलो भाई।। ५९ ।।

अरे पुण्य जो कर्म आज वह धर्म बन रहा।
जो है पूरण हेय किन्तु उपादेय बन रहा।।
उपादेय तो एकमात्र बस वीतरागता।
परम धरम है एकमात्र वह वीतरागता।। ६० ।।

(दोहा)

वीतरागता की अरे, शरण गहो सब लोग।
रागभाव हिंसा कहा, अतः त्यागने योग्य।। ६१ ।।

वीतराग परिणाम ही, केवल करने योग्य।
वीतरागता अहिंसा, परम धर्म है सोय।। ६२ ।।

नेमिनाथ ने जो दिया, विमल तत्त्व उपदेश।
अपनाओ भवि भाव से, जिनवर का आदेश।। ६३ ।।

नेमिनाथ भगवान ने, दिया तत्त्व उपदेश।
भविजन ने ऐसे लिया, जैसे हो आदेश।। १ ।।

प्रीतिपूर्वक ग्रहण कर, सोचें बारंबार।
परम सत्य इस बात का, मन में करें विचार।। २ ।।

(रोला)

निज आतम की बात बताई नेमिनाथ ने।
परमातम की बात बताई नेमिनाथ ने।।
पुण्य–पाप की बात बताई नेमिनाथ ने।
सात तत्त्व की बात बताई नेमिनाथ ने।। ३।।

देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप भी समझाया है।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र भी बतलाया है।।
भेदज्ञान की महिमा भी भरपूर बताई।
आतम के अनुभव की पूरी विधि समझाई।। ४।।

अरे सात सौ वर्षों तक तो नित्य निरन्तर।
ऐसी ही अमृत वर्षा प्रतिदिन होती थी।।
भव्यजनों के महाभाग्य से सभी जनों को।
ऐसा अवसर प्रतिदिन ही मिलता रहता था।। ७।।

हजार वर्ष की आयु पूरी होने आई।
आयु कर्म ने सीमा रेखा है बतलाई।।
अब होगा निर्वाण नेमि जिनवर का भाई !
इसीलिये तो आज आतमा है अकुलाई।। ८।।

जब जैसा जो कुछ होता स्वीकार सहज वह।
उसमें फेरफार करने की बुद्धि न होवे।।
यही मार्ग है और न कोई मारग भाई।
हे भगवन् ! हमसे ऐसा अपराध न होवे।। १७।।

नेमिनाथ से हमें जानना था जो भाई।
वह सब हमने जान लिया है दिव्यध्वनि से।।
अब हमको अपने में रमना जमना होगा।
यह ही है सन्मार्ग एक मुक्ति का भाई।। १८।।

नेमिनाथ मुक्ति में जाते हैं तो जावो।
हम भी अब अपने में जाते ध्यान लगाते।।
आप स्वयं में गये और अब हम जाते हैं।
हे भगवन् ! अब आप चलें हम भी आते हैं।। १९।।

जो सच्चा है भक्त भावना उसकी ऐसी।
ऐसा होता भक्त और भक्ति भी ऐसी।।
कहा आपने सभी स्वयं में रमे जमे तो।
सब रमने जमने को भी तैयार हो गये।। २०।।

कल तक दर्शन मिलते थे वाणी न सही पर।
दर्शन भी तो सर्व पापमल नाशक भाई।।
आज न दर्शन न ही दिव्यवाणी मिलती है।
अब हम हैं अपने पर पूरे निर्भर भाई।। २२।।

अरे परम साधक तो स्वयं में समा गये हैं।
पर साधक पूरे प्रयासरत रहते भाई।।
श्रावकगण ने जिनमन्दिर निर्माण कराये।
उनके भीतर शुद्ध ज्ञान मन्दिर बनवाये।। २३।।

जिनमंदिर में भक्ति का प्रवाह उमड़ेगा।
और ज्ञान मंदिर में ज्ञान की वर्षा होगी।।
ज्ञान और भक्ति का अद्भुत संगम होगा।
नेमिनाथ के उपदेशों की चर्चा होगी।। २४।।

ये जिनमन्दिर समोसरन के ही प्रतीक हैं।
इनमें वह ही होता है जो समोसरन में।।
अरे लाभ भी इनसे भी वैसा ही होगा।
जैसा होता है भविजन को समोसरन में।। २७।।

(वैराग्य महाकाव्य के सत्रहवें एवं अठारहवें सर्ग से साभार)

नेट (जे.आर.एफ.) में चयन

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक ऋषभ शास्त्री दिल्ली का जैनदर्शन विषय से नेट (जे.आर.एफ.) परीक्षा में चयन हो गया है।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

17 जनवरी 2019, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 31 दिसम्बर को '**जैन वाङ्मय का शिरमौर : समयसार**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतीक जैन विदिशा व विनय जैन मुम्बई ने प्रथम एवं अनुभव जैन खनियांधाना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण रजत जैन कापरेन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन बरायठा व पीयूष जैन टडा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा 'गुणभद्रप्रणीतस्य जिनदत्तचरित्रस्य सम्पादनं काव्यशास्त्रीयं समीक्षणं च' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

ज्ञातव्य है कि हाल ही में उनके द्वारा संपादित ग्रंथ 'गोम्मटसार जीवकाण्ड छन्दोदय' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त उनकी पुस्तक 'संस्कृतम्' राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित कर पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जा चुकी है। उन्हें राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान त्रिचूर परिसर द्वारा 'साहित्य प्रतिभा अवार्ड' प्रदान किया जा चुका है एवं राजस्थान के राज्यपाल द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ माधवगंज स्थित श्री सीमंधर आगम जिनालय में दिनांक 30 दिसम्बर 2018 से 2 जनवरी 2019 तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। पण्डित जवाहरलालजी की पुण्यतिथि में आयोजित इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा दोनों समय '**सप्तभयों से रहित होने का उपाय : तत्त्वार्थ चिंतन**' विषय पर व्याख्यान हुये। प्रात:काल आयोजित विधान में स्थानीय विद्वानों का सहयोग रहा।

– चिन्मय बड़कुल (मंत्री–अ.भा.जैन युवा फैडरेशन)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 21 जनवरी	**हेरले**	**पंचकल्याणक**
16 व 17 फरवरी	**पद्मपुरा**	**पत्रकार सम्मेलन**
22 से 24 फरवरी	**जयपुर**	**वार्षिकोत्सव**
5 से 10 अप्रैल	**गुना**	**पंचकल्याणक**
19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर,**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने–बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है, परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।... **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 238**

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com